2018-19

कोर्स वर्क संगीत

उच्च पेपर संगीत

अधिकतम अंक : 100

1. नाट्यशास्त्र के अंतर्गत नाट्योत्पत्ति तथा नायक नायिका भेद।
2. परिभाषाऐं – काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय राग, मेजरटोन, माईनरटोन, सेमीटोन, स्वस्थान नियम, प्रबन्ध, वस्तु, रूपक, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने।
4. वैदिक काल से मध्य काल तक के भारतीय संगीत का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रन्थकारों की श्रुति सिद्धांत पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धान्त एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। संगीत/नृत्य में रस का महत्व।
7. इलैक्ट्रोनिक वाद्यों के गुण अथवा दोष। निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गज़ल।
8. शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य का अन्तर।
9. निम्न ग्रन्थकारों एवं उनके ग्रन्थों का परिचय – भरत – नाट्यशास्त्र, नंदिकेश्वर – अभिनय दर्पण, शांर्गदेव – संगीतरत्नाकर, अहोबल – संगीतपारिजात
10. राग ध्यान तथा राग रागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

HEAD

SOS Library and Information Science
Jiwaji University Gwalior (M.P.)

कोर्स वर्क संगीत 2020-21
उच्च पेपर संगीत

(26)

1 नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्योत्पत्ति तथा नायक-नायिका भेद।

2. परिभाषाएँ – काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय, राग, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, स्वस्थान, नियम, प्रबंध, वस्तु, रूपक भेद, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य, पेशकार, कायदा, रेला, लग्गी, लड़ी।

3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने एवं विशेषताएँ।

4. वैदिक काल से मध्यकाल तक भारतीय संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का इतिहास।

5. भरतकृत सारणा-चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालिन ग्रंथकारों के श्रुति सिद्धांत और पूर्व रंग का अध्ययन।

6. रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। गायन, वादन और नृत्य में रसनिष्पत्ति का महत्व।

7. इलैक्ट्रानिक वाद्यों के गुण-दोष, नर्तक-नर्तकी के गुण-दोष एवं वादकों के गुण-दोष का ज्ञान के साथ-साथ- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गजल आदि का अध्ययन।

8. शास्त्रीय और लोक संगीत-नृत्य तथा वाद्यों का अध्ययन। (गायन, वादन और नृत्य के संदर्भ में)

9. निम्नलिखित ग्रंथकारों एवं उनके ग्रंथों का परिचयात्मक अध्ययन: —
(i) भरत – नाट्यशास्त्र, (ii) नंदिकेश्वर – अभिनयदर्पण, (iii) शारंगदेव – संगीत रत्नाकर, (iv) अहोबल – पारिजात, (v) धनन्जय – दशरूपक।

10. रागध्यान तथा रागरागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

11 ताल के दश प्राणों का अध्ययन।

(हस्ताक्षर) 24/9/2020
(प्रो० बी.डी. मलिक)
अध्यक्ष
Dr. B.D. MALIK
Head of Department (Dance)
V.R.G. Girls P.G. College, Morar Gwalior

2018-1

कोर्स वर्क संगीत

उच्च पेपर संगीत

अधिकतम अंक :

1. नाट्यशास्त्र के अंतर्गत नाट्योत्पत्ति तथा नायक नायिका भेद।
2. परिभाषाऐं - काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय राग, मेजरटोन, [illegible]नरटोन, सेमीटोन, स्वस्थान नियम, प्रबन्ध, वस्तु, रूपक, नाट्य, नृत्त, नृत्य, ताण्डव, लास्य।
3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने।
4. वैदिक काल से मध्य काल तक के भारतीय संगीत का इतिहास।
5. भरतकृत सारणा चतुष्ट्यी। प्राचीन तथा मध्यकालीन ग्रन्थकारों की श्रुति [illegible] पूर्व रंग का अध्ययन।
6. रस निष्पत्ति का सिद्धान्त एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। संगीत/नृत्य [illegible] का महत्व।
7. इलैक्ट्रोनिक वाद्यों के गुण अथवा दोष। निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी [illegible] गज़ल।
8. शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत, शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्य का [illegible]
9. निम्न ग्रन्थकारों एवं उनके ग्रन्थों का परिचय -
   भरत - नाट्यशास्त्र, नंदिकेश्वर - अभिनय दर्पण, शारंगदेव - संगीतरत्नाकर [illegible]
   अहोबल - संगीतपारिजात
10. राग ध्यान तथा राग रागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

Dean [illegible]
SOS Library and Information Science
Jiwaji University Gwalior (M.P.)

Dr. Sanjeev [illegible]
Professor
[illegible]

कोर्स वर्क संगीत 2020-21

उच्च पेपर संगीत

(26)

1 नाट्यशास्त्र के अनुसार नाट्योत्पत्ति तथा नायक-नायिका भेद।

2. परिभाषाऐं → काकु, आड़, कुआड़, बिआड़, आश्रय, राग, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, स्वरस्थान, नियम, प्रबंध, वस्तु, रूपक भेद, नाट्य, नृत्त, नृत्य, तांडव, लास्य, पेशकार, कायदा, रेला, लग्गी, लड़ी।

3. गायन, वादन तथा नृत्य के घराने एवं विशेषताऐं।

4. वैदिक काल से मध्यकाल तक भारतीय संगीत (गायन, वादन और नृत्य) का इतिहास।

5. भरतकृत सारणा-चतुष्टयी। प्राचीन तथा मध्यकालिन ग्रंथकारों के श्रुति सिद्धांत और पूर्व रंग का अध्ययन।

6. रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उसके प्रकारों का अध्ययन। गायन, वादन और नृत्य में रसनिष्पत्ति का महत्व।

7. इलैक्ट्रानिक वाद्यों के गुण-दोष, नर्तक-नर्तकी के गुण-दोष एवं वादकों के गुण-दोष का ज्ञान के साथ-साथ- ख्याल, धमार, टप्पा, तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, कजरी, चैती, होरी, भजन, गजल आदि का अध्ययन।

8. शास्त्रीय और लोक संगीत-नृत्य तथा वाद्यों का अध्ययन। (गायन, वादन और नृत्य के संदर्भ में)

9. निम्नलिखित ग्रंथकारों एवं उनके ग्रंथों का परिचयात्मक अध्ययन: —
(i) भरत- नाट्यशास्त्र, (ii) नंदिकेश्वर- अभिनयदर्पण, (iii) शारंगदेव- संगीत रत्नाकर, (iv) अहोबल - पारिजात, (v) धनन्जय- दशरूपक।

10. रागध्यान तथा रागरागिनी चित्रीकरण। नृत्त हस्त का अध्ययन।

11 ताल के दश प्राणों का अध्ययन।

24/9/2020
(प्रो० बी.डी. ए. मल्लिक)
अध्यक्ष
Dr. B.D.A. Mallick
Head of Department (Dance)
V.R.G. Girls P.G. College, Naya Gwalior

VOCAL

(26)

एम.ए. संगीत
दो वर्षीय चार सेमेस्टर

गायन (कंठ)

सत्र- 2020-21, 2021 - 2022

प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न-पत्र होंगे। दो सैद्धान्तिक दो प्रायोगिक होंगे। जिसकी अंक समीक्षा सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक 100 (85 प्रश्न पत्र 15 सी.सी.ई (सैद्धांतिक)) के होंगे। प्रायोगिक 100 का होगा।

प्रश्नपत्र क्रमांक	प्रथम सेमेस्टर
101	संगीत के सामान्य एवं व्यवहारिक सिद्धान्त
102	भारतीय संगीत का इतिहास
103	राग गायन (प्रायोगिक)
104	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)
प्रश्नपत्र क्रमांक	**द्वितीय सेमेस्टर**
201	संगीत के सामान्य एवं व्यवहारिक सिद्धान्त
202	भारतीय संगीत का इतिहास
203	राग गायन (प्रायोगिक)
204	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)
प्रश्नपत्र क्रमांक	**तृतीय सेमेस्टर**
301	व्यवहारिक एवं क्रियात्मक संगीत शास्त्र
302	ध्वनि शास्त्र तथा रचना एवं निबंध
303	राग गायन (प्रायोगिक)
304	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)
प्रश्नपत्र क्रमांक	**चतुर्थ सेमेस्टर**
401	व्यवहारिक एवं क्रियात्मक संगीत शास्त्र
402	ध्वनि शास्त्र तथा रचना एवं निबंध
403	राग गायन (प्रायोगिक)
404	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)

नोट :- परियोजना कार्य चतुर्थ सेमेस्टर में होगा।

एम. ए. प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर - 2020

कंठ . गायन

समय 3 घंटे

प्रथम प्रश्न पत्र - सैद्धांतिक

प्रायो. - 85
आन्तरिक 15

101 संगीत के सामान्य एवं व्यवहारिक सिद्धांत

ई. 1. निम्न लिखित रागों का विवेचनात्मक अध्ययन -
श्याम कल्याण, अहीर भैरव, शुद्ध सारंग, राग श्री,
गुर्जरी तोड़ी, मेघ मल्हार।

ई. 2 - अ- निम्न लिखित तालों के ठेके को ठाह, आड़, कुआड़, बिआड़ लय में
लिपिबद्ध करना - एकताल, तीनताल, आड़ा चौताल।

ब- प्रायोगिक पाठ्यक्रम के रागों में विलंबित एवं मध्यलय की
बंदिशों को स्वर लिपिबद्ध करना आलाप, तानों एवं तोड़ों सहित।

ई. 3. अ- हारमनी - मैलाडी का अध्ययन।
ब- भारतीय संगीत के सप्तक का विकास।

ई. 4. - दशविधि - राग वर्गीकरण और राग-रागिनी वर्गीकरण।
शुद्ध छायालग, संकीर्ण तथा आश्रय राग।

ई. 5. अ- रस की परिभाषा, रसनिष्पत्ति के सिद्धांत भरत एवं विभिन्न आचार्यों
के मतानुसार।

ब- स्वर एवं रस का अन्तर्संबंध।

(हस्ताक्षर)

एम॰ए॰ प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर - 2020

कंठ- गायन

समय 3 घंटे — पूर्णांक - 35, आं॰मू॰ - 15

द्वितीय प्रश्न पत्र - सैद्धांतिक

102 - भारतीय संगीत का इतिहास

प्र.1. संगीत की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन भारतीय एवं पाश्चात्य मान्यताओं के आधार पर।

प्र.2. अ. भारतीय संगीत का इतिहास वैदिक कालीन संगीत परम्परा।
ब. संगीत कला के विकास में सामवेद का योगदान।

प्र.3. अ. पुराण कालीन संगीत कला विस्तृत अध्ययन।
ब. रामायण और महाभारत कालीन समाज में संगीत कला का स्थान एवं महत्व का विस्तृत अध्ययन।

प्र.4. अ. जैन और बौद्ध काल में संगीत का महत्व एवं विकास का अध्ययन।
ब. मौर्य और गुप्तकाल में संगीत कला के विकास और सामाजिक महत्व का विस्तृत अध्ययन।

प्र.5. अ. निम्नलिखित ग्रंथकारों एवं उनके ग्रंथों का सामान्य अध्ययन- लोचन, अहोबल, श्रीनिवास।
ब. पं॰ ओंकारनाथ ठाकुर और उस्ताद अब्दुल करीम खां का संगीत के विकास में योगदान का विस्तृत अध्ययन।

[illegible]

एम. ए. प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर - 2020

कंठ गायन

समय 1 घंटा — तृतीय प्रश्न पत्र - प्रायोगिक — पूर्णांक 100

103 राग गायन - वायवा

ई.1. विस्तृत अध्ययन के ~~राग~~ राग-

श्याम कल्याण, शुद्ध सारंग, अहीर भैरव, राग श्री, गुजरीतोड़ी

इन रागों में दक्षता पूर्ण गायन करने का पूर्ण अभ्यास।

ई.2. सामान्य अध्ययन के राग —

दुर्गा, मारवा, सोहिनी, मेघमल्हार, भैरवी और बसंत।

इन रागों में दो द्रुत रचनाएँ।

ई. पाठ्यक्रम (सैद्धांतिक) के तालों को ताल लगाकर विभिन्न लयकारी ~~करके~~ में पढ़त करने का अभ्यास।

[signature]

एम. ए. प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर - 2020

कंठ - गायन

समय 1 घंटा

चतुर्थ प्रश्न पत्र - प्रायोगिक

पूर्णांक 100

104 . मंच प्रदर्शन

अ. आमंत्रित श्रोता - दर्शकों के समक्ष अपनी पसंद के किसी भी राग में स्वतंत्र गायन की दक्षतापूर्ण प्रस्तुती।

ब. सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के रागों में से किसी भी राग में परीक्षक द्वारा पूछे जाने पर गायन करने की क्षमता।

स. ~~किसी~~ पाठ्यक्रम के किसी भी राग में निम्नलिखित विषयों का अभ्यास —

ध्रुपद, धमार, तराना और ठुमरी।

[signature]

एम० ए० द्वितीय सेमेस्टर – जून 2021

समय 3 घंटे

पूर्णांक – 35
आंतरिक – 15

कंठ- गायन

प्रथम प्रश्न पत्र - सैद्धांतिक

201 - संगीत के सामान्य एवं व्यवहारिक सिद्धांत

ई. 1 निम्नलिखित रागों का विवेचनात्मक अध्ययन –
देवगिरि बिलावल, मारु बिहाग, सूर मल्हार, नायकीकान्हड़ा, झिंझोटी।

ई. 2. निम्नलिखित तालों के ठेके को ठाह, आड़, कुआड़, बिआड़ लयकारियों को लिपिबद्ध करने का अभ्यास –
—चौताल, अष्टमंगल, सवारी पंचम और गजझम्पा

ई. 3. निम्नांकित का अध्ययन – मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, डायटोनिक स्केल, समविभागीय स्वर सप्तक।

ई. 4. – रागवर्गीकरण – थाट राग, राग- रागांग वर्गीकरण।

ई. 5. पाठ्यक्रम के उपर्युक्त रागों में दिये गये तालों ~~के~~ में पदों की रचना करना।

(हस्ताक्षर)

एम॰ ए॰ द्वितीय सेमेस्टर — जून 2021

पूर्णांक – 85
एम॰ ड्यूटी — आंतरिक 15

कंठ – गायन

द्वितीय प्रश्न पत्र – सैद्धांतिक

202 – भारतीय संगीत का इतिहास

ई॰1 – भरत एवं शारंगदेव कालिन संगीत – स्वर, श्रुति सारणा का अध्ययन।

ई॰2 – अ॰ चीन, जापान और ईरान के संगीत का विस्तृत अध्ययन।
ब॰ दक्षिण तथा उत्तर भारतीय संगीत ~~पद्धति~~ पद्धति का विस्तृत अध्ययन।

ई॰3 – अ॰ मध्य युगीन ~~क~~ संगीत कला का अध्ययन।
ब॰ संगीत कला के विकास में राजा मानसिंह के योगदान का अध्ययन।

ई॰4 – भारतीय संगीत के विकास में निम्नलिखित ~~[illegible]~~ आचार्यों के योगदान का विस्तृत अध्ययन—
त्र्यंबक भरती, विष्णु नारायण भातखंडे, ~~[illegible]~~
विष्णु दिगम्बर पलुस्कर।

ई॰5 – संगीत के विकास में घरानों का योगदान—
ग्वालियर घराना, किराना घराना, जयपुर घराना, आगरा घराना, सेनिया घराना, इमदाद खां घराना।

एम० द्वितीय सेमेस्टर – जून 2021

कंठ-गायन

समय 1 घंटा — चतुर्थ प्रश्न पत्र – प्रायोगिक — पूर्णांक 100

204 – मंच-प्रदर्शन

अ. आमंत्रित श्रोता दर्शकों के समक्ष अपने पसंदीदा किसी भी एक राग में दक्षता पूर्ण गायन प्रदर्शन करना।

ब. परीक्षक द्वारा पूछे गये पाठ्यक्रमों के किसी भी एक राग में गायन प्रस्तुत करना।

स. पाठ्यक्रम के किसी भी राग में– ठुमरी, दादरा, टप्पा, उपज आदि गायन शैली प्रस्तुत करना।

अथवा

यमन, जौनपुरी, दरबारी कान्हड़ा, मुलतानी आदि में सुगम गायन। –

[signature]

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर — दिसंबर - 2021

समय
3 घंटे

पू.अं. 85
आं.मू. 15

कंठ - गायन

प्रथम प्रश्न पत्र — सैद्धांतिक

301 व्यवहारिक एवं क्रियात्मक संगीत शास्त्र

ई01. निम्नलिखित रागों का विवेचनात्मक अध्ययन –

दरबारी, पूरिया धनाश्री, अभोगी कान्हड़ा,

बिलासखानी तोड़ी, भूपाल तोड़ी, गोरख कल्याण।

ई.2. निम्नलिखित तालों के ठेके को, ठाह, आड़, कुआड़, बिआड़ लय में लिपिबद्ध करना।

शिखर, अष्टमंगल, चौताल, रुद्र।

ई.3. पाठ्यक्रम के रागों में विलंबित एवं मध्यलय की बंदिशों की स्वरलिपि लेखन का अभ्यास। आलाप एवं तानों तथा तोड़ों को स्वरलिपि बद्ध करने का अभ्यास।

ई.4. अ. नोटेशन पद्धतियों का विकास एवं विस्तृत अध्ययन।

ब. प्राचीन एवं मध्यकालिन निबद्ध का अभ्यास।

ई.5 अ. हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के चालीस सिद्धांत।

ब. मार्गी एवं देशी संगीत का वर्णन।

(signature)

एम० ए० तृतीय सेमेस्टर- दिसंबर - 2021

समय 3 घंटे।

कंठ - गायन

द्वितीय प्रश्न पत्र — सैद्धांतिक

पूर्णांक - 85
आ० मू० - 15

302 ध्वनि शास्त्र, रचना सिद्धांत एवं निबंध लेखन

ई० 1. ध्वनि का अर्थ उत्पत्ति तथा कंठ स्वर संस्थान की जानकारी।

ई० 2 - वाद्यों की ~~[illegible]~~ ऐतिहासिक जानकारी- उत्पत्ति, विकास और महत्व — एकतंत्री, त्रितंत्री, किन्नरी, वीणाऐं, सितार, मत्तकोकिला, सरोद, सारंगी।

ई० 3. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत पद्धतियों के स्वर, राग एवं गीत प्रकारों का तुलनात्मक अध्ययन।

ई० 4. गीत रचना के सिद्धांत एवं दिये गये पदों एवं बोलों को ~~[illegible]~~ पाठ्यक्रम के तालों में निबद्ध करने का अभ्यास।

ई० 5. निबंध लेखन कार्य — किसी भी एक विषय पर — पाश्चात्य संगीत, रस संगीत, नाट्योदित प्रकरण, स्वर प्रस्तार, सुगम संगीत।

[signature]

एम. ए. तृतीय सेमेस्टर - दिसंबर - 2021

कंठ गायन

समय 1 घंटा

प्रायोगिक 100

तृतीय प्रश्न पत्र - प्रायोगिक

303 राग गायन वादन

ई. 1 - विस्तृत अध्ययन के राग -
दरबारी, पूरिया धनाश्री, अभोगी कान्हड़ा, बिलासखानी तोड़ी,
जोग, गोरख कल्याण।

उपर्युक्त रागों में से किन्हीं दो रागों में पूर्ण दक्षता के साथ गायन
का अभ्यास एवं शेष रागों का सामान्य अध्ययन।

ई. 2. सामान्य अध्ययन के राग -
हंसध्वनि, जोगिया, वसंत मुखारी, हिंडोल, भूपाल तोड़ी,
कोमल रिषभ आसावरी में 4 द्रुत रचनाओं का
अभ्यास।

[signature]

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर - दिसंबर - 2021

कंठ गायन

समय 1 घंटा | पूर्णांक - 100

चतुर्थ प्रश्न पत्र - प्रायोगिक

304 - मंच प्रदर्शन

अ. आमंत्रित श्रोता दर्शकों के समक्ष अपनी पसंदीदा किसी भी एक राग में दक्षता पूर्ण गायक प्रस्तुत करना।

ब. परीक्षक द्वारा पूछे गये पाठ्यक्रम के किसी राग का गायन कर सुनाना।

स. किसी राग में - तराना, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, दादरा गायकी की प्रस्तुतिकरण।

[signature]

एम॰ ए॰ चतुर्थ सेमेस्टर – जून 2022

कंठ-गायन

प्रथम प्रश्न पत्र – सैद्धांतिक

पूर्णांक – 85

आंतरिक मू॰ 15

समय 3 घंटे

401 – व्यवहारिक एवं क्रियात्मक संगीत शास्त्र

ई.1. निम्नलिखित रागों का विवेचनात्मक अध्ययन –
बिभास, मधुवंती, पूरिया कल्याण, चन्द्रकौंस, भटियार, जोगकौंस।

ई.2. निम्नलिखित तालों के ठेकों को ठाह, आड़, कुआड़, बिआड़ में लिपिबद्ध करना।

ई.3. पाठ्यक्रम के उपर्युक्त रागों में विलंबित एवं मध्यलय की बंदिशों को स्वरलिपि बद्ध करने का अभ्यास आलाप, तान एवं तोड़ो सहित।

ई.4. संगीत, छन्दशास्त्र और ताल का अध्ययन तथा पारस्परिक संबंध।

ई.5. दिये गये पदों को उचित ताल एवं पाठ्यक्रम के रागों में स्वरलिपिबद्ध करना।

[signature]

एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर – जून 2022

समय : 3 घंटे

कंठ गायन

पूर्णांक – 85
आ०मू० 15

द्वितीय प्रश्न पत्र – सैद्धांतिक

402, ध्वनिशास्त्र, रचना सिद्धांत एवं निबंधलेखन

ई.1 नाद, सहायक नाद, स्वयंभू नाद, कर्ण की बनावट एवं श्रवण सिद्धांत का अध्ययन।

ई.2 भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण एवं महत्व का अध्ययन।

ई.3 - नोटेशन पद्धतियों का विकास एवं विस्तृत अध्ययन।

ई.4. गीत रचना के सिद्धांत एवं दिये गये पदों को उपयुक्त (पाठ्यक्रम) के रागों में ताल के अनुसार निबद्ध करना।

ई.5. संगीत से संबंधित विषयों पर निबंध –
भारतीय संगीत, पाश्चात्य संगीत, संगीत में रस का महत्व, संगीत शिक्षण पद्धति में गुरु-शिष्य परम्परा, संस्थागत संगीत शिक्षण का महत्व।

(हस्ताक्षर)

एम० ए० चतुर्थ सेमेस्टर – जून 2022

समय 1 घंटा

पूर्णांक 100

कंठ गायन

तृतीय प्रश्न पत्र – प्रायोगिक

403 राग गायन - धारावा

प्र. 1 . विस्तृत अध्ययन के राग –

विभास, मधुवंती, पूरिया कल्याण, चंद्रकौंस, अडियार, जोग कौंस।

उपर्युक्त रागों में किन्हीं भी दो रागों में विलंबित एवं द्रुत रचनाओं का गायन।

प्र. 2 . सामान्य अध्ययन के राग –

पूरिया, धानी, बसंत, ललित, नंद, नट भैरव का सामान्य अध्ययन एवं द्रुत रचनाओं का गायन।

प्र. 3. पाठ्यक्रम के तालों को ताल लगाना।

एम॰ ए॰ चतुर्थ सेमेस्टर – जून 2022

कंठ गायन

समय 1 घंटा — चतुर्थ प्रश्न – प्रायोगिक — पूर्णांक 100

401 – मंच प्रदर्शन

अ. आमंत्रित श्रोता दर्शकों के समक्ष अपने पसंद का किसी भी एक राग में दक्षता पूर्ण स्वतंत्र गायन करना।

ब. परीक्षक द्वारा पूछे गये पाठ्यक्रम के रागों में गायन करने क्षमता।

स. निम्नलिखित में से किसी एक राग में ध्रुपद, तिरवट, चतुरंग, ठुमरी, टप्पा आदि गायिकी का अभ्यास — देशकार, शंकरा, तिलककामोद, भैरव, छायानट।

[signature]

Dance

26

एम.ए. संगीत
दो वर्षीय चार सेमेस्टर

नृत्य

सत्र - 2020-21, 2021-2022

प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्न-पत्र होंगे। दो सैद्धान्तिक दो प्रायोगिक होंगे जिसकी अंक समीक्षा सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक 100 (85 प्रश्न पत्र 15 सी.सी.ई (सैद्धांतिक)) के होंगे। प्रायोगिक 100 का होगा।

प्रश्नपत्र क्रमांक	प्रथम सेमेस्टर
101	भारतीय नृत्य कला का इतिहास
102	निबंध लेखन और ताललिपि संरचना
103	वायवा (प्रायोगिक)
104	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)

प्रश्नपत्र क्रमांक	द्वितीय सेमेस्टर
201	भारतीय नृत्य कला का इतिहास
202	निबंध लेखन और ताललिपि संरचना
203	वायवा (प्रायोगिक)
204	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)

प्रश्नपत्र क्रमांक	तृतीय सेमेस्टर
301	भारतीय नृत्य कला का इतिहास
302	निबंध लेखन और ताललिपि संरचना
303	वायवा (प्रायोगिक)
304	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)

प्रश्नपत्र क्रमांक	चतुर्थ सेमेस्टर
401	भारतीय नृत्य कला का इतिहास
402	निबंध लेखन और ताललिपि संरचना
403	वायवा (प्रायोगिक)
404	मंच प्रदर्शन (प्रायोगिक)

नोट :- परियोजना कार्य चतुर्थ सेमेस्टर में होगा।

एम० ए० प्रथम सेमेस्टर दिसंबर - 2020

कथक नृत्य KATHAK DANCE

समय - 3 घंटा

प्रथम प्रश्न पत्र - शास्त्र - पूर्णांक 85

आं० मू० - 15

101 भारतीय नृत्य कला का इतिहास

ई० 1 भारतीय नृत्य कला इतिहास - (प्रागैतिहासिक काल, वैदिक काल, पुराण काल, रामायण और महाभारत काल)

ई० 2 (i) आचार्य भरत के नाट्य शास्त्र के अनुसार - नाट्यवेद का निर्माण, नाट्यावतरण और नाट्य के महत्व अध्ययन

ई० (ii) लोक नृत्य की उत्पत्ति, विकास, और धार्मिक तथा सामाजिक महत्व।

ई० 3 - भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का अध्ययन - (कथक, भरतनाट्यम, कथकली और मणीपुरी)।

ई० 4 आचार्य नंदिकेश्वर के अभिनय दर्पण के अनुसार असंयुक्त हस्तों का विनियोग सहित अध्ययन।

ई० 5 (i) आचार्य नंदिकेश्वर के ग्रंथ अभिनय दर्पण का सामान्य अध्ययन।

(ii) कथक नृत्य के विकास में निम्नलिखित गुरुवों का योगदान -

(i) पं० बिंदादीन महाराज (Binadadin) (ii) पं० अच्छन महाराज,

(i) पं० बिंदादीन महाराज और पं० शम्भू महाराज

(iii) पं० लच्छू महाराज

एम० ए० प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर - 2020

कथक नृत्य (KATHAK DANCE)

समय - 3 घंटा

द्वितीय प्रश्न पत्र - शास्त्र

पूर्णांक - 85
आ०मू० 15

102 निबंध लेखन और ताल लिपि संरचना

ई० 1 कथक नृत्य से संबंधित विषयों पर निबंध -
(i) भारतीय नृत्य कला का इतिहास एवं विकास।
(ii) नाट्यावतरण।
(iii) कथक नृत्य में गुरु - शिष्य परम्परा।
(iv) कथक नृत्य की उत्पत्ति, विकास और वर्तमान स्थिति।

ई० 2. तीन में सीखे गये विभिन्न बोल - बंदिशों को ताल लिपि बद्ध करना।

ई० 3. रूपक और धमार में बोल बंदिशों को लिपिबद्ध करना।

ई० 4. (i) कथक नृत्य की मंच प्रस्तुती।
(ii) सोलह श्रृंगार और बारह आभूषण का अध्ययन।

ई० 5 कथक नृत्य के भाव पक्ष से संबंधित विषयों का अध्ययन -
(i) गतभाव (ii) ठुमरी भाव (iii) वंदना भाव।

एम॰ ए॰ प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर - 2020

कथक नृत्य - प्रायोगिक खण्ड

[illegible] - वायवा

पूर्णांक - 100

समय - 1 घंटा

तृतीय प्रश्न पत्र — प्रायोगिक

103 वायवा

ई-1 . तीनताल 16 मात्रा में —
2 आमद, 10 तोड़े, 5 परणें (चतस्र, तिस्र, मिश्र जाति),
3 कवित्त और तिहाईयों का अभ्यास ।

ई॰ 2 . ताल रूपक (7 मात्रा) और धमार (14 मात्रा) में —
2 आमद, 5 तोड़े, 3 परणें विभिन्न जातियों के
2 कवित्त और तिहाईयों का अभ्यास ।

ई॰ 3 (i) गत निकास - छूट, घूंघट और मुरली के प्रकार ।
(ii) गत भाव - पनिहारिन ।

ई॰ 4 . ततकार के प्रकारों का अभ्यास ।

ई॰ 5 — ठुमरी अथवा भजन पर भाव नृत्य एवं नृत्य के प्रारंभ में इष्ट देव वंदना ।

एम॰ ए॰ प्रथम सेमेस्टर - दिसंबर 2020

कथक नृत्य - प्रायोगिक खण्ड

104 चतुर्थ प्रश्न पत्र प्रायोगिक - मंच प्रदर्शन

पूर्णांक - 100

समय - 1 घंटा   104 - मंच प्रदर्शन

पाठ्यक्रम

इकाई 1. आमंत्रित दर्शकों के समक्ष प्रायोगिक के किसी भी एक ताल स्वतंत्र नृत्य प्रदर्शन क्षमता।

इकाई 2. गत निकास एवं गत भाव का प्रदर्शन।

इकाई 3 ततकार का उच्चतम प्रदर्शन।

इकाई 4. भजन अथवा ठुमरी पर भाव नृत्य

इकाई 5 - असंयुक्त हस्तों का प्रायोगिक प्रदर्शन।

एम॰ ए॰ द्वितीय सेमेस्टर - जून-2020-2021।

कथक नृत्य : शास्त्र

समय- 3 घंटा प्रथम - प्रश्न पत्र पूर्णांक - 85

आ०मू० 15

201 भारतीय नृत्य कला का इतिहास

ई01 (i) आचार्य भरत के अनुसार रस निष्पत्ति का सिद्धांत एवं उनके परवर्ती आचार्यों द्वारा रस निष्पत्ति सूत्र की व्याख्याओं का अध्ययन।

(ii) नव रसों का अध्ययन एवं नृत्य (कथक) में उनका महत्व।

ई02 - आचार्य भरत के अनुसार रंगमंच का अध्ययन - रंगमंच निर्माण विधि एवं रंगमंच के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन।

ई03 (i) नायक - नायिका भेदों का अध्ययन एवं कथक नृत्य में इनका महत्व।

(ii) नर्तन भेद - नाट्य, नृत्त और नृत्य का अध्ययन।

ई4. अभिनय भेदों का विस्तारपूर्वक अध्ययन एवं कथक नृत्य में महत्व।

ई5. आचार्य नंदिकेश्वर के अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त हस्त मुद्राओं श्लोक सहित नाम एवं विनियोग सहित व्याख्या।

एम॰ ए॰ द्वितीय सेमेस्टर - जून - 2020-2021

कथक नृत्य - शास्त्र

समय - 3 घंटा | द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक - 85
आंतरिक - 15

202 निबंधलेखन एवं रचनात्मक अध्ययन

प्र॰1 - निबंध विषय -

(i) कथक नृत्य में नाट्य, नृत्त और नृत्य के दर्शन।

(ii) कथक नृत्य में नवरसों का महत्व।

(iii) कथक नृत्य में नायिका भेदों का महत्व।

(iv) कथक नृत्य में अभिनय भेदों का महत्व।

(v) ~~नृत्य और साहित्य~~ नृत्य कला के विकास में साहित्य का योगदान।

प्र॰2 - तीनताल में विभिन्न बोल - बंदिशों को लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

प्र॰3 - सवारी ताल में विभिन्न बोल - बंदिशों को लिपिबद्ध करना।

प्र॰4 - तिवरा ताल (7 मात्रा) और धमार (14 मात्रा) में बोल - बंदिशों की रचना।

प्र॰5 - कथक नृत्य के विकास में गुरुवों के योगदान का अध्ययन -

(i) पं॰ जयलाल महाराज, (ii) पं॰ नारायण प्रसाद,

(iii) विदुषी सितारा देवी (iv) पं॰ सुखदेव महाराज।

[signature]

एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर - जून 2020 - 2021

कथक नृत्य प्रायोगिक खण्ड

तृतीय प्रश्न पत्र 203 प्रायोगिक - - - - वायवा

समय - 1 घंटा पूर्णांक - 100

ई० 1 - गुरु वंदना अथवा किसी भी देवी-देवताओं पर आधारित श्लोकों अथवा पदों पर वंदना भाव नृत्य।

ई० 2 - (i) ताल तीनताल में प्रथम सेमेस्टर के बोल - बंदिशों का अभ्यास।

(ii) ताल सवारी में पूर्ण नृत्याभ्यास - 2 आमद, 5 तोड़े, 5 परन (तिस्र, मिश्र, चतस्र जाति) - चक्रदार परन, 2 कवित्त और तिहाई आदि का अभ्यास।

ई. 3. ताल तिवरा (7 मात्रा) और ~~[illegible]~~ धमार (14 मात्रा) में नृत्याभ्यास - 2 कवित्त और ~~[illegible]~~ 01 आमद, 3 तोड़े, 3 परण, 2 चक्रदार, तिहाई का अभ्यास।

ई. 4 (i) गत निकास - घूंघट, रुखसार, (रुखसार), बिंदिया, मटकी का अभ्यास।

(ii) गतभाव - होली का अभ्यास।

ई० 5 - (i) ततकार का उच्चतम प्रदर्शन।

(ii) ठुमरी अथवा भजन पर भाव नृत्य।

[signature]

एम० ए० द्वितीय सेमेस्टर - जून 2020-2021

कथक नृत्य प्रायोगिक खण्ड

चतुर्थ प्रश्न पत्र प्रायोगिक -

पूर्णांक 100

समय 1 घंटा

204 मंच प्रदर्शन

ई० 1. आमंत्रित दर्शकों के समक्ष - तीनताल अथवा सवारी ताल में सम्पूर्ण नृत्य प्रदर्शन।

ई० 2. गत निकास एवं गतभाव होली का प्रदर्शन।

ई० 3. ततकार में लग्गी, लड़ी का उच्चतम प्रदर्शन।

ई० 4 - भाव अंग में - ठुमरी अथवा भजन पर भाव नृत्य।

ई० 5 - संयुक्त हस्त मुद्राओं का प्रायोगिक प्रदर्शन।

एम० ए० तृतीय सेमेस्टर – दिसंबर 2021

कथक नृत्य

प्रथम-प्रश्न पत्र शास्त्र –

समय 3 घंटे

पूर्णांक 85

आन्त- 15

301 भारतीय नृत्यकला का इतिहास

प्र० 1. आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार – 108 करण और 32 अंगहारों का अध्ययन।

प्र० 2. (i) आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र के भावों का अध्ययन – 8 स्थायी भाव, 8 सात्विक भाव और 33 संचारी भाव।

(ii) कथक नृत्य में भाव महत्व।

प्र० 3. (i) रासलीला का अध्ययन और कथक नृत्य से संबंध।

(ii) वृत्ति का अध्ययन कथक नृत्य के संदर्भ में।

प्र० 4. कथक नृत्य के विकास में राजदरबारों का योगदान – (i) लखनऊ दरबार (ii) रायगढ़ दरबार

प्र० 5. (i) आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का सामान्य अध्ययन।

(ii) देवदासी प्रथा का अध्ययन।

एम० ए० तृतीय सेमेस्टर - दिसंबर 2021

कथक नृत्य

द्वितीय प्रश्न पत्र - शास्त्र

समय 3 घंटे

302 निबंध लेखन और रचनात्मक अध्ययन | पूर्णांक 85

आन्तरिक - 15

प्र० 1. निबंध -

(i) कथक नृत्य के विकास में राजदरबारों का योगदान |

(ii) कथक नृत्य के विकास में शिक्षण संस्थाओं का योगदान |

(iii) कथक नृत्य के विकास में गुरुओं का योगदान |

(iv) कथक नृत्य में भाव का महत्व |

(v) देवदासी प्रथा |

प्र० 2. तीनताल में विभिन्न बोल बंदिशों को लिपिबद्ध करना |

प्र० 3. शिखर ताल में बोल बंदिशों को लिपिबद्ध करना |

प्र० 4 - रुद्र ताल में बोल बंदिशों को लिपिबद्ध करना |

प्र० 5. (i) दिगम्बर पलुस्कर और भातखण्डे ताल लिपि का अध्ययन |

(ii) कथक नृत्य के विकास में गुरुओं का योगदान -

(i) पं० कार्तिक राम (ii) पं० कल्याण दास महंत

(iii) पं० फिरतु महाराज |

एम. ए. तृतीय सेमेस्टर - दिसंबर 2021

कथक नृत्य

तृतीयप्रश्नपत्र प्रायोगिक खण्ड

प्रायोगिक : - - वायवा

समय 1 घंटा पूर्णांक 100

303 वायवा

ई. 1 - तीन ताल में उच्च स्तरीय नृत्याभ्यास।

ई. 2 ताल शिखर और रुद्र में नृत्याभ्यास –
2 आमद, 5 तोड़ा, 5 परन (तिस्र, मिश्र, चतस्र जाति),
2 चक्रदार परण-तोड़ा, 2 कवित्त और तिहाईयां।

ई. 3 - (i) गतनिकास - प्रथम और द्वितीय सेमेस्टर के गत निकासों में दक्षता के साथ-साथ - तलवार, तीरकमान आदि निकासों का प्रदर्शन।
(ii) गतभाव - गोवर्धन लीला अथवा कालिया दमन।

ई. 4 - ततकार द्वारा विभिन्न लयकारियों, कायदा और रेला आदि का अभ्यास।

ई. 5. (i) तिरवट अथवा चतुरंग नृत्यों का अभ्यास।
(ii) ठुमरी अथवा भजन पर भाव नृत्य।

[signature]

एम. ए. तृतीय सेमेस्टर - दिसंबर - 2021

कथक नृत्य

चतुर्थ प्रश्नपत्र प्रायोगिक खण्ड

प्रायोगिक -

समय: 1 घंटा

304 मंच प्रदर्शन -

पूर्णांक 100

ई. 1. आमंत्रित दर्शकों के समक्ष -
तीनताल अथवा शिखर अथवा रूद्र में स्वतंत्र नृत्य प्रदर्शन।

ई. 2. गतभाव - कालियादमन अथवा गोवर्धन लीला का भावपूर्ण नाटकीय प्रदर्शन।

ई. 3. ततकार का उच्चस्तरीय प्रदर्शन एवं लयकारियाँ।

ई. 4. तिरवट अथवा चतुरंग नृत्य का प्रदर्शन।

ई. 5. ठुमरी, गजल अथवा भजन पर भाव नृत्य प्रदर्शन।

एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर – जून - 2022

कथक नृत्य - शास्त्र

समय-3 घंटे — प्रथम प्रश्न पत्र — पूर्णांक 85, आन्तरिक 15

A01 भारतीय नृत्यकला का विशद अध्ययन

इ. 1 - (i) आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र के अनुसार पूर्व रंग का अध्ययन।

(ii) कथक नृत्य के संदर्भ में पूर्व रंग का अध्ययन।

(iii) कथक नृत्य घरानों का अध्ययन।

इ. 2. अभिनय दर्पण के अनुसार - देव हस्त, दशावतार हस्त, नवग्रह हस्त और बांधव हस्तों का अध्ययन।

इ. 3. ताल के दश प्राणों का अध्ययन।

इ. 4. (i) शास्त्रीय नृत्यों का अध्ययन - मोहिनी अट्टम, ओडिसी, कुचीपुडी और सत्रीय।

(ii) अभिनय दर्पण के अनुसार गति भेदों का अध्ययन।

इ. 5 - (i) निम्नलिखित विषयों का अध्ययन -
स्थानक, चारी, पाद, मण्डल।

(ii) कथक नृत्य के विकास में पं. बिरजू महाराज का योगदान।

एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर जून 2022

कथक नृत्य शास्त्र

द्वितीय प्रश्न पत्र

सत्रीय-अंक

पूर्णांक 85

आन्त. 15

A02 निबंध लेखन और रचनात्मक लेखन

ई.01 - निबंध लेखन

(i) कथक नृत्य में पूर्वरंग का महत्व।

(ii) कथक नृत्य में ताल और लय का महत्व

(iii) कथक नृत्य का प्रस्तुती क्रम

(iv) कथक नृत्य में गुरू-शिष्य परम्परा का महत्व

(v) कथक नृत्य में हस्त मुद्राओं का महत्व।

ई.02. तीनताल और गजझम्पा में नृत्य संरचना लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

ई.3. बसंत अथवा मत्त (9 मात्रा) में बोल बंदिश संरचना लिपिबद्ध।

ई.4 - कथक नृत्य में नृत्य नाटिका संरचना - दिये गये बिंदुओं के आधार पर-
(i) पंचवटी (ii) द्रौपदी वस्त्र हरण और (iii) माखन चोरी।

बिंदु - कथानक, पात्र चयन, वेशभूषा, रस,।

ई.5. कथक नृत्य के विकास में गुरुओं का योगदान -
पं. गोपीकृष्ण, डॉ. पुरु दाधीच, डॉ. टी.डी. आशीर्वादम।

[signature]

एम॰ ए॰ चतुर्थ सेमेस्टर – जून 2022

कथक नृत्य-
समय 1 घंटा तृतीय प्रश्न पत्र प्रायोगिक खण्ड
403 – प्रायोगिक – वायवा

पूर्णांक 100

प्र. 1. तीनताल में उच्च स्तरीय नृत्य प्रदर्शन के साथ साथ – दल बादल, कड़क बिजली, दर्जा, जाति परन, त्रिपल्ली, चौपल्ली, अतीत, अनागत आदि का अभ्यास।

प्र. 2. गजझम्पा में नृत्याभ्यास –
2 आमद, 5 तोड़े, 5 परण, चक्कार – 2, कवित्त – 2 तिहाईयाँ आदि।

प्र. 3. मत्त और बसंत ताल 9 मात्रा में नृत्याभ्यास –
आमद – 2, तोड़े – 5, परण – 5, चक्कारदार, कवित्त – 2 तिहाईयाँ आदि।

प्र. 4. (i) गत निकास – प्रथम, द्वितीय और तृतीय सेमेस्टर के गत निकासों का दक्षता पूर्वक प्रदर्शन के साथ-साथ – कटार, मटका आदि निकास का प्रदर्शन।

(ii) गतभाव – माखन चोरी अथवा पंचवटी।

प्र. 5. (i) तिरवट, चतुरंग, तराना पर नृत्याभ्यास।
(ii) ठुमरी, गजल, भजन पर नृत्याभ्यास

(हस्ताक्षर)

एम० ए० चतुर्थ सेमेस्टर - जून 2022

प्रायोगिक खण्ड -

समय : घंटा चतुर्थ प्रश्न पत्र

पूर्णांक 100

404 - मंच प्रदर्शन -

प्र.1. आमंत्रित दर्शकों के समक्ष स्वतंत्र नृत्य प्रस्तुति - तीनताल, गजझम्पा, मत्त अथवा बसंत तालों में से किसी एक ताल में।

प्र.2. दल बादल, कड़क बिजली, दर्जा, जाति परण, त्रिपल्ली, चौपल्ली, अतीत, अनागत आदि का प्रदर्शन।

प्र.3. तिरवट, चतुरंग, तराना में से किसी एक पर नृत्य प्रस्तुति।

प्र.4. ठुमरी, गजल, भजन आदि में से किसी एक भाव नृत्य।

प्र.5. ततकार का उच्चस्तरीय प्रदर्शन।

(हस्ताक्षर)